AMAR UJALA MY CITY PAGE 5

कुमार विश्वास के गीतों से सजी शाम-ए-अवध

अमर उजाला

लखनऊ विश्वविद्यालय के शताब्दी समारोह की पांचवीं शाम कवि डॉ. कुमार विश्वास के गीतों से सजी। दो घंटे के कार्यक्रम में उन्होंने सभी को गुदगुदाया तो राजनेताओं की खिंचाई करने से भी बाज नहीं आए। इस दौरान कश्मीर के हालात को बयां करती कविता सुनाकर उन्होंने देशभक्ति का भाव भी जगाया। आयोजन के दौरान मौजूद विद्यार्थियों का उत्साह देखने लायक रहा। पढ़ें पेज 05

लखनऊ विश्वविद्यालय के शताब्दी समारोह में गूंजे कुमार विश्वास के गीत, खूब झूमे युवा

इस अधूरी जवानी का क्या फायदा, बिन कथानक कहानी का क्या फायदा...

माई सिटी रिपोर्टर

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के शताब्दी समारोह की पांचवीं शाम कवि डॉ. कुमार विश्वास के गीतों से जवां हो उठी। लखनऊ की सर्पाणि गोमती का मचलना ये पानी भी है... गीत से कार्यक्रम की शुरुआत करने वाले कुमार ने दो घंटे तक सभी को गुदगुदाया, युवा मन को टटोला, प्रेम का आभास कराया, टूटे मन को सांत्वना दी तो कुलपति और राजनेताओं की खिंचाई भी की। उनके गीतों में अटलजी को समर्पित इस शाम में पूर्व प्रधानमंत्री के लिए सम्मान दिखा तो कश्मीर के हालातों पर संजीदगी भी झलकी। कोविड-19 की वजह से कारों बंदियों के साथ विद्यार्थियों को कार्यक्रम में शामिल होने दिया गया था। इसको देखते हुए कुमार विश्वास ने कुलपति से हालत सामान्य होने पर दोबारा बुलाने के लिए न्योता भी मांगा।

कुमार विश्वास ने अटलजी की कर्मभूमि लखनऊ को नमन करते हुए अपने गीत 'गोमती का मचलना ये पानी भी है, हिंद के उस नगर की कहानी भी है। गंग हजरत चिकन चौक की आरजू, ये शाम-ए-अवध तर्जुमा रूबरू-रूबरू' से कार्यक्रम की शुरुआत की तो पूरा कला प्रांगण तालियों से गूंज उठा। इसके बाद उन्होंने जवानी में कई गजलें अधूरी छूट जाती हैं... का भी गायन किया। अटलजी की मशहूर कविता गीत नहीं गाता हूं, हार नहीं मानूंगा, गीत नया गाता हूं... गीत गाया तो पुकारों ने उनके शब्दों में अपने मन

University of Lucknow लखनऊ विश्वविद्यालय Centenary Year शताब्दी वर्ष 1920-2020

JAGRAN CITY PAGE I

...तुम्हारी सोकर गुजरी है, हमारी रोकर गुजरी है

लखनऊ विश्वविद्यालय में अटल स्मृति काव्य संध्या में डा. कुमार विश्वास ने युवाओं का मन मोहा

कवि कुमार विश्वास का अंदाज ही अलग है। मंच पर उनके आते ही श्रोताओं में उत्साह भर जाता है। मंच पर वह कुछ ही क्षणों में श्रोताओं के मन को मोह लेते हैं। वह जब कविता पढ़ते हैं तो श्रोता उनके साथ-साथ गुनगुनाने लगते हैं। ऐसा ही कुछ नजारा मंगलवार को लखनऊ विश्वविद्यालय के सभागार में देखने को मिला। विश्वास ने अपना पहला ही मुक्तक पढ़ा...

मिलो न तुम तो हमारे बीच कोई दूरी है,
हमारे बस में तो यह दर्द कोई दूरी है।
तुम्हारे और मेरी रात में बस फर्क इतना है,
तुम्हारी आधी दूरी है हमारी आधी दूरी है।

लखनऊ विश्वविद्यालय के सभागार में अटल स्मृति काव्य संध्या में डा. कुमार विश्वास ने अपनी कविताओं से युवाओं का मन मोहा। विश्वास ने अपना पहला मुक्तक पढ़ा तो श्रोताओं ने उन्हें भरपूर प्रोत्साहन दिया। उन्होंने अपने एक-एक मुक्तक से श्रोताओं को मोहित किया। अपने मुक्तकों के माध्यम से उन्होंने युवाओं को जीवन का सार सिखाया। विश्वास ने कहा कि जिस तरह से आज युवा पीढ़ी को देखता हूं तो मुझे लगता है कि मैं उनसे कुछ सीखूं। उन्होंने अपने एक मुक्तक के माध्यम से कहा कि...

तुम्हारी रात में बस एक बात होती है,
हमारी रात में सौ बात होती है।
तुम्हारी रात में बस चांद होता है,
हमारी रात में तो चांद-तारे होते हैं।

विश्वास ने अपने मुक्तक के माध्यम से कहा कि...

मिलो न तुम तो हमारे बीच कोई दूरी है,
हमारे बस में तो यह दर्द कोई दूरी है।
तुम्हारी और मेरी रात में बस फर्क इतना है,
तुम्हारी आधी दूरी है हमारी आधी दूरी है।

विश्वास ने अपने

मोहब्बत एक अहसासों की पावन सी कहानी है...

शताब्दी समारोह में कुमार विश्वास ने अपनी कविताओं से श्रोताओं को झूमने पर किया मजबूर

वरिष्ठ संवाददाता (vol)

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय शताब्दी समारोह के पांचवे दिवस की संध्या में सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत कला संकाय के प्रांगण में सुप्रसिद्ध कवि डॉक्टर कुमार विश्वास ने सिरकत की। कार्यक्रम के शुरू होने से पहले युवा कवि एवं विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र पंकज प्रसून ने कोरोना के परिप्रेक्ष्य में कुछ छोटी पंक्तियों का वाचन किया। साथ साथ उन्होंने मशहूर शायर मरहूम राहत इंदौरी साहब का एक शेर भी सुनाया।

इसके अलावा उन्होंने लखनऊ के संस्कृति से सम्बंधित कुछ रोचक पंक्तियां सुनाई।

गोमती का मचलता ये पानी भी है... पंक्तियों से शुरूआत कर डॉक्टर विश्वास ने लखनऊ शहर के खूबियों को संकलित कर सम्पूर्ण माहौल में उत्साह का संचार कर दिया। जवानी में कई गजलें अधूरी छूट जाती हैं... का भी उन्होंने वाचन किया। तत्पश्चात उन्होंने सम्पूर्ण राष्ट्र के हृदय सम्राट दिवंगत आदरणीय अटल बिहारी वाजपई को स्मरण किया। इसके बाद उन्होंने अटल जी की सुप्रसिद्ध कविता गीत नहीं गाता हूँ... सुनाया। फिर उन्होंने हार नहीं मानूंगा... गीत नया गाता हूँ... भी सुना कर युवाओं में जोश भर दिया। डॉक्टर विश्वास ने ये तेरा दिल समझता है..., मोहब्बत एक अहसासों की पावन सी कहानी है... जैसी कविताये भी सुनाई। उन्होंने 'परहों आंसुओं से आंखे नम कर रहा हूँ मैं...' , 'इस अधूरी जवानी का क्या फायदा...' सुनाया तो लोग मंत्र मुग्ध हो गए। फिर उन्होंने 'वक्त के क्रूर कल का भरोसा नहीं, आज जी लो कल का भरोसा नहीं...तात्ल को तात्ल की झंझलाहट से वियुक्तित किया जाता है।

इस लखनऊ स्कूल के चौथे स्तम्भ थे इन तीन शिक्षकों के शिष्य प्रो. अवध किशोर सरन। इन विद्वानों द्वारा ज्ञान की समग्र दृष्टि को केंद्र में रख कर सामाजिक विज्ञानों के एकीकृत अध्ययन पर जोर दिया गया। इस तरह इन्होंने तुलनात्मक अर्थशास्त्र को आगे बढ़ाया। ब्रह्म तौर पर प्रो. राधा कमल मुखर्जी अपने इस अभिगम में सफल रहे। और उन्होंने प्रयास से डिफरेंसिंग ऑफ इकोनॉमिक्स एंड सोशियोलॉजी मूर्त रूप लेकर 1955 तक इसे रूप दे कायम रहा। हालांकि यह एक निर्देशन ही कही जाएगी कि प्रो. मुखर्जी के न चाहते हुए भी और उनकी इच्छाओं (जो अनुसूचित एवं जनजातियन हो) और सोशियोलॉजी की पृथक स्थापना हो गयी। फिर भी, ज्ञान-मीमांसा के प्रति प्रो. मुखर्जी की आस्था निष्काम बनी रही।

कुलपति ने किया प्रदर्शनी का उद्घाटन

लखनऊ विश्वविद्यालय के शताब्दी वर्ष को मनाने के लिएए मध्यकालीन और आधुनिक इतिहास विभाग ने प्रसिद्ध इतिहासकारों द्वारा व्याख्यान की एक श्रृंखला का आयोजन किया। 20 नवंबर 2020 को प्रख्यात प्रोफेसर फीके पोष ने लखनऊ विश्वविद्यालय के लाल बारादरीज फुसफुसाते हुए यादों का एक व्याख्यान दिया। विभाग ने इतिहास के इतिहास विषय पर एक प्रदर्शनी भी आयोजित की। प्रदर्शनी का उद्घाटन कुलपति प्रोफेसर आलोक कुमार राय ने किया, जहाँ विभाग के प्रतिष्ठित विशेषज्ञों ने कुलपति को भारतीय मध्यकालीन के ऐतिहासिक विकास के बारे में बताया और यह भारत और विश्व के आधुनिक इतिहास से कैसे संबंधित है।

नुक्कड़ नाटक हक है मेरा का मंचन

लखनऊ विश्वविद्यालय के शताब्दी समारोह के अवसर पर आज लखनऊ विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा नुक्कड़ नाटक की प्रस्तुति दी गई। छात्रों ने इस कार्यक्रम में महिलाओं के जीवन में होने वाली कठिनाइयों और उनकी संभावनाओं के प्रति एक अद्भुत प्रस्तुति दी। बच्चों व महिलाओं को उनके हको के प्रति जागरुक करने के लिए इस नाटक का मंचन किया गया।

पंकज प्रसून ने हास्य व्यंग्य में दिया विज्ञान का संदेश

लखनऊ। हास्य व्यंग्य कवि पंकज प्रसून विज्ञान को सीरियस नहीं बल्कि सेलिब्रेशन बनाना चाहते हैं। लविवि के शताब्दी वर्ष के अवसर पर मालवीय सभागार में आयोजित कार्यक्रम में भी उन्होंने यही संदेश दिया कि आम जनमानस में कविता के जरिए विज्ञान को प्रसारित किया जा सकता है। पंकज प्रसून इसे अपना लक्ष्य बताते हुए कहते हैं कि विज्ञान कविताएं प्राइमरी के पाठ्यक्रम में शामिल हों, जिससे बच्चे के विकास के शुरुआती दौर में ही वह विज्ञान के सिद्धांतों को सीख जाए। उन्होंने श्रोताओं की फरमाइश पर अपनी कविता लड़कियां बड़ी लड़का होती हैं भी सुनाई। उन्होंने दिल और सेहत के संबंध को एक अलग अंदाज में परिभाषित करते हुए पढ़ा-कैसे बने सहारा दिल, ब्लड पंम्पिंग से हारा दिल, प्यार घटा है, फैट बढ़ा है, कोलेस्ट्रील का मारा दिल...। पहले मोम की खिड़की थी वह फिर लोहे का डोर हो गई, मीठे बोल बोलती थी फिर डेसीबल का शोर हो गई, शादी से भी पहले मुझको नाइट्रस ऑक्साइड लगती थी, शादी हुई तो एक दम से वह एचएएसओफोर हो गई।

वर्चुअल दुनिया में बनते बिगड़ते संबंधों पर भी उन्होंने चुटकी ली-तुमने ब्लॉक किया है मुझको लेकिन इतना बतला दो ना, दिल में जो प्रोफाइल है वो कैसे ब्लॉक करोगी, बंद किये सारे दरवाजेए लेकिन इतना समझा देना, मन की जो ओपन विंडो है उसको कैसे लॉक करोगी।

हॉकी मैच खेले कई भारतीय टीम के खिलाड़ी

लखनऊ विश्वविद्यालय के शताब्दी समारोह के अवसर पर सप्ताह व्यापी कार्यक्रमों में आज 23 नवंबर 2020 सोमवार को लखनऊ विश्वविद्यालय के क्रीड़ा प्रांगण में हॉकी मैच का आयोजन किया गया। इस हॉकी मैच में भारतीय हॉकी टीम के प्रसिद्ध खिलाड़ी भाग लिए जोकि विभिन्न अंतरराष्ट्रीय हॉकी मैच खेलकर देश का गौरव बढ़ाते हुए अनेक पदक प्राप्त किए हैं। इनमें कुछ ओलंपियन खिलाड़ी रह चुके हैं। श्री रविंद्र पाल 1980 में ओलंपिक खेल में भारत के लिए स्वर्ण पदक प्राप्त किया था।

विज्ञान उत्सव में दिखीं वैज्ञानिक प्रतिभाएं

विज्ञान उत्सव के चौथे दिन आज मुख्य आकर्षण डॉ. राज मेहरोत्रा, क्षेत्रीय निदेशक, क्षेत्रीय विज्ञान शहर, अलीगंज लखनऊ द्वारा प्रदर्शित रोचक रसायन विज्ञान प्रयोग थे। डॉ. मेहरोत्रा ने तरल नाइट्रोजन के साथ दिलचस्प रसायन विज्ञान प्रयोगों द्वारा कई सरल प्रदर्शित किए और अवरक्त सेंसर आधारित संवेदीकरण मशीन के कामकाज को प्रदर्शित किया था। इसके बाद फेस्टिवल में यूनिसेफ के एक प्रख्यात व्यक्तित्व द्वारा एक दिलचस्प ऑनलाइन व्याख्यान का प्रसारण किया गया।

टांगे पर बैठकर एलयू परिसर का किया दौरा

आज के दिन लखनऊ विश्वविद्यालय के तीसरी हेरिटेज वॉक की शुरूआत भाऊराव देवर द्वार से हुई। आज की हेरिटेज वॉक शक्ति मिशन शक्ति पर आधारित थी। इसके तहत हमने विश्वविद्यालय के तीन अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध युवा पूर्व छात्रों को आमंत्रित किया। अंजलि सिंह जुट फॉर लाइफ की संस्थापक हैं, जिसके तहत आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग की 1000 से अधिक महिलाओं को रोजगार मिला है और जिन्हें हाल ही में सरकार द्वारा एवा महिला उद्यमी पुरस्कार मिला है। नंदनी दिवाकर, एक प्रसिद्ध मास्टर शेफ जो कि भारत के शीर्ष 8 प्रतियोगियों में से एक है।

लखनऊ विश्वविद्यालय का अर्थशास्त्र विभाग ज्ञान की गौरवशाली विरासत

- डिपार्टमेंट ऑफ इकोनॉमिक्स एंड सोशियोलॉजी विभाग के तहत होती थी अर्थशास्त्र संग समाजशास्त्र व मनावशास्त्र की पढ़ाई
- विभाग की त्रिमूर्ति थे 'एम'- प्रो. राधा कमल मुखर्जी, प्रो. डी.पी. मुकर्जी एवं प्रो. डी.एन. मजूमदार
- 1955 में डिपार्टमेंट ऑफ सोशियोलॉजी की पृथक स्थापना हो गयी
- प्रो. डी.पी. मुकर्जी 30 वर्ष बाद बने थे प्रोफेसर
- प्रो. वीर बहादुर सिंह को गिरी विकास अध्ययन संस्थान की स्थापना श्रेय
- कुलपति प्रो. आचार्य नरेन्द्र देव ने परम्परा को तोड़कर प्रो. मुकर्जी को बनाया था प्रोफेसर

प्रोफेसर ए.पी. तिवारी

विश्ववार्ता संवाददाता

लखनऊ। वर्ष 1921 में लखनऊ विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ ही यहां अर्थशास्त्र अस्तित्व में आया। उस समय इसकी पहाई-लिखाई डिपार्टमेंट ऑफ इकोनॉमिक्स एंड सोशियोलॉजी के तहत होती थी। इस विभाग में अर्थशास्त्र संग समाजशास्त्र एवं मानवशास्त्र का भी पठन-पाठन होता था। विश्वविद्यालय में 1921 में सर्वप्रथम दो प्रोफेसर नियुक्त हुए। इनमें से प्रो. राधा कमल मुखर्जी एक थे। दूसरे थे पुरातत्ववेत्ता के प्रो. वीरसन साहनी। इस तरह प्रो. राधा कमल मुखर्जी अर्थशास्त्र व समाजशास्त्र विभाग के संस्थापक अध्यक्ष बने। विभाग के त्रिमूर्ति 'एम'- प्रो. राधा कमल मुखर्जी, प्रो. डी.पी. मुकर्जी एवं प्रो. डी.एन. मजूमदार के नीतिक चिंतन व विशिष्ट अकादमिक अवदान के कारण संदर्भित विभाग को 'लखनऊ स्कूल' के नाम से पहचाना जाता है।

प्रो. मुखर्जी ने अपने व्याख्यानों में निरंतर इस तरह के आर्थिक विज्ञान को रचना का पक्ष रखा जो समाज के लिए समग्रता में उपयोगी हो। 'दि फॉउंडेशन्स ऑफ इंडियन इकोनोमिक्स' (1916) में प्रो. मुखर्जी ने परम्परागत जैविक गांव के पुनर्गठन की बात रखी। ऐसा गाँव सहकारी समाजार्थिक प्रणाली, कृषि एवं उद्योग के बीच सन्तुलन,लघु व बड़े उद्योगों से युक्त हो। वस्तुतः प्रो. मुखर्जी की अंतर्विषयक दृष्टि का सुन्दर दर्शन उनकी 1925 में प्रकाशित पुस्तक 'कोऑपरेटिव ऑफ इकोनॉमिक्स' में मिलता है। साथ ही, प्रो. मुखर्जी ने 1921 में 'रिविसिएन ऑफ कम्पेटिटव इकोनॉमिक्स' में निरपेक्षवाद पर आधारित परिभाषों सिद्धान्तों को तार्किक तरीके से खारिज किया। और तुलनात्मक दृष्टि का प्रतिपादन किया। उनका मानना था कि समाजशास्त्र आर्थिक विश्लेषण के लिए एक परिप्रेक्ष्य या रीति है न कि अलग विषय। अर्थशास्त्र के क्षेत्र एवं महत्व के बारे में प्रो. मुखर्जी का विचार उनकी पुस्तक 'दि इंटिग्रेटेड सुलतान स्कोरी ऑफ इकोनोमिक्स' (1942) में प्रगट होता है। सामाजिक मुखर्जी अपने इस अभिगम में सफल रहे। और उन्होंने प्रयास से डिपार्टमेंट ऑफ इकोनॉमिक्स एंड सोशियोलॉजी मूर्त रूप लेकर 1955 तक इसे रूप दे कायम रहा। हालांकि यह एक निर्देशन ही कही जाएगी कि प्रो. मुखर्जी के न चाहते हुए भी और उनकी इच्छाओं (जो अनुसूचित एवं जनजातियन हो) और सोशियोलॉजी की पृथक स्थापना हो गयी। फिर भी, ज्ञान-मीमांसा के प्रति प्रो. मुखर्जी की आस्था निष्काम बनी रही।

प्रो. डी.पी. मुकर्जी ने लखनऊ विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र एवं समाजशास्त्र के प्रवक्ता के पद पर 1922 में कार्यभार ग्रहण किया। लगभग 30 साल बाद भी वह प्रोफेसर नहीं बन पाए थे। इसका कारण यह था कि उस समय उपकुलपति विभाग में एक ही प्रोफेसर बनाया। इस तरह वह 1951 में प्रो. राधा कमल मुखर्जी के बाद विभागध्यक्ष बने। प्रो. डी.पी. मुकर्जी दुनिया के उन बुद्धिजीवियों में से एक थे जिन्होंने समाजवादी अर्थतंत्र की बुद्धिजीवीवाद विरोधी बलशाली तकनों को समझा। प्रो. मुकर्जी का मानना था कि समाजवाद को भारतीय परंपरा के अनुरूप अपने को गढ़ कर इसका भारतीयकरण करना होगा। उन्होंने नियोजन एवं अर्थव्यवस्था के बारे में अर्थव्यवस्था तथा संस्कृति के बीच के अन्तर्संबन्ध को समझने पर बल दिया।

प्रो. डी.पी. मुकर्जी के बाद प्रो. बलराज सिंह अर्थशास्त्र विभाग के अध्यक्ष बने। प्रो. सिंह की अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति थी। उन्होंने अध्या पी. लर्नर के 'कंजलगत पहालेनेस' की अवधारणा को पूर्णतौर दी। प्रो. सिंह का विचार था कि लर्नर की अवधारणा विकसित देशों के लिये ही उपयोगी है, जहाँ राजकोषीय नीति का मुख्य उद्देश्य अर्थव्यवस्था को स्थिरता देना है। प्रो. सिंह ने इसकी जगह 'एक्सिडेंटिंग पाईनेस' की अवधारणा का प्रतिपादन किया जो विकासशील देशों के लिए प्रासंगिक है। उनका विचार था कि इस अवधारणा के तहत भारत सरीखे विकासशील देशों में राजकोषीय नीति का मुख्य उद्देश्य सार्वजनिक बचत एवं निवेश को बढ़ाते हुये आर्थिक विकास को गति की तीव्र करना है। प्रो. सिंह का यह योगदान आज तक समीचीन बना हुआ है।

प्रो. सिंह के बाद प्रो. क्षेत्रन सिंह विभाग के अध्यक्ष बने। प्रो. सिंह आर्थिक सांख्यिकी एवं कृषि अर्थशास्त्र के विशेषज्ञ थे। उन्हें नवरत्न विद्या के अधिक विकास की गति को पकड़ नहीं। प्रो. सिंह का यह योगदान आज तक समीचीन बना हुआ है।

प्रो. सिंह के बाद प्रो. क्षेत्रन सिंह विभाग के अध्यक्ष बने। प्रो. सिंह आर्थिक सांख्यिकी एवं कृषि अर्थशास्त्र के विशेषज्ञ थे। उन्हें नवरत्न विद्या के अधिक विकास की गति को पकड़ नहीं। प्रो. सिंह का यह योगदान आज तक समीचीन बना हुआ है।

प्रो. वीर बहादुर सिंह के अकादमिक निधन के बाद मौद्रिक अर्थशास्त्र के तत्वज्ञानिक विद्वान प्रो. एन.एल. श्रीवास्तव विभाग के अध्यक्ष बने। उन्हें अंक ज्योतिष का भी उत्कृष्ट ज्ञान था। प्रो. श्रीवास्तव ने व्यष्टि अर्थशास्त्र एवं गीता के सिद्धांतों के संसलेषण पर अग्रणित कार्य किया है। वहीं, लोकवित्त के जाने-माने अर्थशास्त्री प्रो. शैलेंद्र सिंह ने केन्द्र-राज्य वित्तीय संबंधों एवं वित्त आयोग की भूमिका पर उल्लेखनीय कार्य किया। प्रो. सिंह ने उत्तर प्रदेश एवं बिहार सरीखे पिछड़े राज्यों को केन्द्र से अधिक वित्तीय सहायता की पक्षदारी की। उन्होंने 1980 में ही सुझाव दिया था कि सरकारी खर्च के योजना तथा गैर-योजना के वर्गीकरण को समाप्त किया जाए। महत्वपूर्ण है कि मौजूदा केन्द्र सरकार द्वारा इस सुझाव को अपनाये जाना पहचाना जा चुका है।

प्रो. एन.एल. श्रीवास्तव के बाद प्रो. परितोष बनर्जी विभाग के अध्यक्ष बने। वह अर्थमिति के मर्मज्ञ थे। उनके शोधपत्र 'सांख्या' जैसे जर्नल में प्रकाशित हुये। प्रो. बनर्जी को भारतीय ज्योतिष का भी अच्छा ज्ञान था।उन्होंने भारतीय विभाग के कुछ अलग रत्न दो है- भुजंग भूषण मुखर्जी, प्रो. एम.डी. जोशी, प्रो. के.वी.जी. सेठ एवं प्रो. टी.एल. पन्तेला।

अर्थशास्त्र विभाग से एडजंक्ट फ्यूलोशन रिसर्च सेन्टर तथा इंस्टिट्यूट ऑफ डेवलपमेंट स्टडीज ने भी शोध के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इस तरह विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग को ज्ञान की गौरवशाली विरासत रही है।

(लेखक डॉ. शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ में अध्यापन विभाग के अध्यक्ष रहे हैं)

कैसे बने सहारा दिल, ब्लड पंपिंग से हारा दिल

विश्ववार्ता संवाद

लखनऊ। पंकज की कविताएं आपको ठाठके लगाने पर मजबूर कर देंगे। ऐसा ही नजारा लखनऊ विश्वविद्यालय के साहित्य उत्सव में देखने को मिला। मालवीय सभागार में चर्चित व्यंग्यकार कवि पंकज प्रसून ने छात्रों को खूब हंसाया। उन्होंने प्रस्तुति से पहले विश्वविद्यालय को नमन करते हुए अपने छात्र जीवन को स्मरण किया। साथ चलाय कि लखनऊ विश्वविद्यालय अपने प्रतिभाशाली छात्रों को सदा स्मरण करता रहता है।

पंकज प्रसून विज्ञान को सीरियस नहीं बल्कि सेलिब्रेशन की तरह पेश किया।

उन्होंने जैसे ही कविता 'तुमने ब्लॉक किया है' सुनाये लेकिन इतना बताना होगा, दिल में जो प्रोफाइल है वो कैसे ब्लॉक करोगी, बन्द किये सारे दरवाजे लेकिन इतना समझा देना, मन की जो ओपन विंडो है उसको कैसे लॉक करोगी... यही तो पूरा समाधान हंसी के ठहाको से गूंज उठा। वर्चाला में रिलेकर जब उन्होंने समझ, हाईटेक की बातें की तो इस प्रयोगात्मक कविताओं पर खूब वाहवाही मिली। उन्होंने खूब गए। उनके अकाउंट फेसबुक पर, वैक में लिखा कोई खाता नहीं है, कर रहे वो खाता इन और खाता आउट, किसको करना खाता तक अता नहीं है... सुनकर हंसी की मशीनरी सजाई। इसके बाद तुम बनो तो मेरा मौन बनो मैं तेरे मीठे बोल बनू, तुम मेरा सिस्टोल बनो मैं तेरा डायस्टोल बनू, जाति धर्म सब अलग अलग हैं लेकिन एक हमारा दिल... सुनाया।

पंकज ने जब तुम्हारी आंखों में न्यूटन का गुरुत्वकर्षण है, जिसमे गगा इस तरह भरा है, जैसे एफिडर के दिलों में एल्कोहल भरा है, जकरत है तो मोहब्बत के करंट की, जुड़ गया है मन से मन का वायर, मुझमे तो प्रेम की पैक्लिंग छठ बिखेरा। कम्पयूटर पर भी उन्होंने जैसे ही सुनाया 'जो है सबसे बड़े रिस्क का वायरस कम्प्यूटर की हार्ड डिस्क का वायरस कोरोना से ज्यादा खतरनाक है उसको कहते हैं सब इसक का वायरस' तो हास ठाठाकी से गूंज उठा। आंखिर में उन्होंने अपनी कविता लड़कियां बड़ी लड़का होती है सुनाकर खूब वाहवाही बटोरी।

विज्ञान महोत्सव

लखनऊ। विज्ञान उत्सव के चौथे दिन मुख्य आकर्षण डॉ.राज मेहरोत्रा, क्षेत्रीय निदेशक, क्षेत्रीय विज्ञान शहर, अलीगंज, लखनऊ द्वारा प्रदर्शित रोचक रसायन विज्ञान प्रयोग थे। डॉ. मेहरोत्रा ने तरल नाइट्रोजन के साथ दिलचस्प रसायन विज्ञान प्रयोगों द्वारा कई सरल प्रदर्शित किए और अवरक्त सेंसर आधारित संवेदीकरण मशीन के कामकाज को प्रदर्शित किया था। इसके बाद, फेस्टिवल में यूनिसेफ के एक प्रख्यात व्यक्तित्व द्वारा एक दिलचस्प ऑनलाइन व्याख्यान का प्रसारण किया गया। इसके अलावा, क्षेत्रीय विज्ञान केंद्र की मोबाइल वैन ने नए और दिलचस्प प्रयोग प्रदर्शित किए, जो लोगों को दिन-प्रतिदिन के जीवन में मिलते हैं। इसके अलावा, विभिन्न विभागों के स्टालों ने विज्ञान के विभिन्न हिस्सों में नए विकास को प्रदर्शित किया।

गोमती का मचलता ये पानी भी है...

विश्ववार्ता संवाददाता

लखनऊ। गोमती का मचलता ये पानी भी है..' पंक्तियों से कुमार विश्वास ने कार्यक्रम का आगाज किया तो कला संकाय का प्रांगण तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। इन पंक्तियों से डॉ. विश्वास ने लखनऊ शहर के खूबियों को संकलित कर सम्पूर्ण माहौल में उत्साह का संचार कर दिया। मौका था लखनऊ विश्वविद्यालय का स्थापना दिवस का शताब्दी समारोह। यह शब्द 'भरत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी की स्मृतियों को समर्पित थी।

इसके बाद तो डॉ. विश्वास ने एक बाद एक अपनी रचनाओं को ऐसी महफिल जमाई कि लोगों को समय का पता ही नहीं चला। उन्होंने 'जवानी में कई गजलें अधूरी छूट जाती हैं..' सुनाई तो लोग झूमने लगे। इसके बाद उन्होंने सम्पूर्ण राष्ट्र के हृदय सम्राट और भरत रत्न दिवंगत प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपई को स्मरण किया। और फिर उन्होंने दिवंगत प्रधानमंत्री की सुप्रसिद्ध कविता "गीत नया गाता हूं। फिर उन्होंने 'हार नहीं मानूंगा..., गीत नया गाता हूँ.. भी सुना कर युवाओं में जोश भर दिया। डॉक्टर विश्वास ने "ये तेरा दिल समझता है.., मोहब्बत एक अहसासों की पावन सी कहानी है... जैसी कविताये भी सुनाई। उन्होंने 'परहों आंसुओं से आंखे नम कर रहा हूँ मैं...' , 'इस अधूरी जवानी का क्या फायदा...' सुनाया तो लोग मंत्र मुग्ध हो गए। फिर उन्होंने 'वक्त के क्रूर कल का भरोसा नहीं, आज जी लो कल का भरोसा नहीं...तात्ल को तात्ल की झंझलाहट से वियुक्तित किया जाता है। तो मिले, रूप को भाव की आकृति तो मिले.... भी सुनाई। उन्होंने कश्मीर पर 'जांघ की कश्मर की तपस्या ने तपाया है तुझे, ऋषि अगस्त ने हम कर बनाया है तुझे, मेरे कश्मीर मेरी जान मेरे प्यारे चमन.. कविता सुना कर लोगों में देश भक्ति का संचार कर दिया।

- सुनाए लखनऊ में बिताए किस्से

छात्र कुमार विश्वास के नारे लगाकर विश्वास को जब मंच पर बुला रहे थे। तो वह आते ही बोले 'नारे बंद करो यार'। इस जय-जयकार में दो साल लग गए। एलयू के पुराने किस्से सुनाते हुए कुमार विश्वास ने अपने मित्र वैक्विंद मेंडी कृशेश पाठक और शिक्षक प्रो. रमेश दीक्षित का जिक्र किया। अटल जी के विचारों को सुनाया। साहित्यकार अमृत लाल नगर को याद किया। कहा कि अटल जी की स्मृतियों में सारे मंच पर अटल के विश्वविद्यालय में आया हूं।

खुब उड़ी सामाजिक दूरी की धजियां

शहर में कोरोना का प्रकोप बढ़ता जा रहा है। इसके बावजूद कुमार विश्वास के कार्यक्रम में कोरोना गाइडलाइन कि धजियां उड़ाई जा रही थी। हजारो की संख्या में छात्र सामाजिक दूरी का पालन नहीं कर पाए और ना ही ऐसी कोई व्यवस्था थी और ना ही छात्रों को मास्क की फिक्र थी। उल्लास की इस महफिल में कोरोना का कोई डर नहीं दिखा।

कुमार विश्वास ने बदल दिया माहौल

University of Lucknow
लखनऊ विश्वविद्यालय

वर्तमान छात्रों ने ओलंपियन और इंटरनेशनल हॉकी खिलाड़ियों को किया पराजित

विश्ववार्ता संवाददाता

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के पैक्लिंगन मैदान पर सोमवार को ओलंपिक और राष्ट्रीय खिलाड़ियों की पूर्व छात्रों की टीम और वर्तमान छात्रों की टीम के बीच आयोजित हॉकी मैच काफी रोमांचक रहा। हालांकि उम्मीद के विपरीत वर्तमान छात्रों ने मैदान पर कब्जा कर लिया। दूसरी ओर पूर्व छात्राओं और वर्तमान छात्राओं के बीच हुआ हॉकी मैच कड़ी की टक्कर के बाद ड्रॉ रहा।

हॉकी मैच का उद्घाटन लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर आलोक कुमार राय ने किया। इस अवसर पर कुलपति के अलावा कुलसचिव विनोद सिंह, मुख्य कुलनुशासक प्रोफेसर दिनेश कुमार, निर्माण विभाग के अधीक्षक प्रो. दुर्गेश कुमार श्रीवास्तव, लखनऊ विश्वविद्यालय एथलेटिक एसोसिएशन के सचिव प्रोफेसर केके अग्रवाल और पवन अग्रवाल मौजूद थे।

इस हॉकी मैच में भारतीय हॉकी टीम के प्रसिद्ध खिलाड़ी भाग लिए, जोकि विभिन्न अंतरराष्ट्रीय हॉकी मैच खेलकर देश का गौरव बढ़ाते हुए अनेक पदक प्राप्त किए हैं। इनमें कुछ ओलंपियन खिलाड़ी रह चुके हैं।

रविंद्र पाल 1980 में ओलंपिक खेल में भारत के लिए स्वर्ण पदक प्राप्त किया था। सुजीत कुमार (ओलंपियन), रजनीश मिश्रा (इंटरनेशनल हॉकी खिलाड़ी), ध्यानचंद के सुपुत्र देवेंद्र ध्यानचंद, भारतीय हॉकी टीम के गोलकीपर नेगी जी, रिजवी जी (इंटरनेशनल हॉकी खिलाड़ी) और मुकुल शाह आदि प्रसिद्ध जाने-माने हॉकी खिलाड़ियों ने लखनऊ विश्वविद्यालय हॉकी टीम के चालक बालिकाओं के साथ उनके उत्साहवर्धन के लिए 20:20 मिनट का हॉकी मैच खेला।

वहीं पूर्व छात्राओं और वर्तमान छात्राओं के बीच हुए हॉकी मैच हुआ। जिसमें कोई भी टीम गोल नहीं कर पाई और मैच ड्रॉ रहा। मैच के समापन के बाद ओलंपियन व अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ियों को लविवि के कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय ने अंग वस्त्र व मुकेट देकर सम्मानित किया।

हमने हॉकी के खिलाड़ियों को देखकर सीखा

मेरे खुद ने हॉकी है, मै 1975 में लखनऊ आया था। स्पोर्ट्स हॉस्टल में रहकर हॉकी सीखना शुरू किया था। उस समय जहां भी जाता था पाछा के नाम के कारण हर जगह इज्जत मिलती थी। मेरे पिता मेजर ध्यान चंद हॉकी के जादूगर थे, लोग मुझे और मेरे बड़े भाई अशोक ध्यानचंद भी उन्हीं के जैसा समझते थे . हम अपने ओर से पूरी कोशिश करते थे . उसी कर परिणाम है कि हम दोनो भाइयों ने हॉकी का नेशनल लेवल पर नेतृत्व किया है। आज हमारी हॉकी अच्छी स्थिति में है। इसे और बेहतर करने किया जा रहा है .

– देवेंद्र ध्यान चंद, पूर्व नेशनल हॉकी प्लेयर

हम 1978 से 81 तक बेकेरी का छात्र रहे है. कॉलेज के समय से ही मैने हॉकी खेलना शुरू कर दिया था। उस समय जब हम ग्राउंड डबल खिलाड़ियों को देखने वो लिए आते थे। उन्हीं को खेलता देखकर हमने भी हॉकी खेलना शुरू किया। उसी का रिजल्ट रहा है मै इंडिया टीम के खेल सका। आज से डिफेंट यह स्वतंत्र हासिल है हमारे समय में यह नहीं था। अब यह खेल छोटे शहरों तक सीमित होकर रह गया है। आज हमारे स्टेट में वल्ल लेवल हॉकी खत्म हो चुका है। यह केवल गरीब बच्चों का खेल बनकर रह गया है। यूपी में हॉकी को आगे लेकर जाना है कि इसकी नर्सरी हमने स्कूलों में खोलना होगा। आज राउंड के स्टेट, पंजाब और हरियाणा हमें हमने बेहतर कर रहे है। स्कूल लेवल पर इसको बढ़ाना होगा। तभी हमारे स्टेट में दोबारा से हॉकी पहले के मुकाम पर पहुंच सकेगी।

– बीरस नेगी, पूर्व नेशनल हॉकी प्लेयर

हॉकी का कैटेट से करारी करना संभव नहीं है, पर हम उसे बेहतर कर सकते हैं। आज इस खेल को लेकर हमारे देश में हॉकी को लेकर बहुत संभावनाएं है बस हमे उसे सुधारने की जरूरत है। बीते कुछ सालों में हमारे स्टेट में इस खेल को लेकर काफी कुछ बेहतर किया हैं। हम नेशनल लेवल पर जुनियर और सीनियर लेवल के ओलिंपियन हैं। मौजूदा समय में हमारे स्टेट के दो प्लेयर ओलंपिक के लिए लगे नेशनल कैम्प में शामिल है। जल्द ही यूपी भी हॉकी में अपने पुराने स्तवे को हासिल कर लेंगा।

राजनिश मिश्रा, पूर्व नेशनल हॉकी प्लेयर

हमारी हॉकी दुनिया मे सबसे बेहतर थी हमने इस खेल में कई सालो तक अपना दबदबा कायम रखा है. पर आज हॉकी को लेकर ग्रेस क्रेज यूपी में नहीं जैसा पहले रहा था। अब यह खेल छोटे शहरों तक सीमित होकर रह गया है। आज हमारे स्टेट में वल्ल लेवल हॉकी खत्म हो चुका है। यह केवल गरीब बच्चों का खेल बनकर रह गया है। यूपी में हॉकी को आगे लेकर जाना है कि इसकी नर्सरी हमने स्कूलों में खोलना होगा। आज राउंड के स्टेट, पंजाब और हरियाणा हमें हमने बेहतर कर रहे है। स्कूल लेवल पर इसको बढ़ाना होगा। तभी हमारे स्टेट में दोबारा से हॉकी पहले के मुकाम पर पहुंच सकेगी।

– बीरस नेगी, पूर्व नेशनल हॉकी प्लेयर

TODAY AT LU

EVENT	VENUE	TIME
Athletic meet	Ayurveda and Unani University	6am
Heritage walk	LU campus	9.30am
Art and science festival	LU campus	11am
Museum visit	LU campus	12 noon
Kavi Sammelan	Malviya Hall	2.30pm
Alumni meet	Arts quadrangle	4.30 pm

Presentation of science experiments

Times News Network

Lucknow: Live demonstration of chemistry experiments for Lucknow University students by Director of Regional Science City, Aliganj, Raj Mehrotra was the main attraction of Centenary Science Fest as part of the Lucknow University centenary celebrations on Monday.

Mehrotra performed many simple but interesting experiments with liquid nitrogen and also showed how infrared sensor-based machines function.

"I have been performing street plays since school but this sense of pride was never there. Performing during centenary celebrations is something that cannot be expressed in words
Prashant Chaubey | MA STUDENT

"I made sure to practice for as many hours as I could to that my performance during the centenary celebration is perfect. It's a big day for all students
Bonshe | BA STUDENT

Verse-worth: Vishwas's poetic take on LU, politics & corona captivates

Asks Students To Value UP, Says Even Lord Ram Decided To Take A Plot Here

Mohita.Tewari
@timesgroup.com

Poet Kumar Vishwas giving a presentation at LU on Monday

Lucknow: The Lucknow University was abuzz with excitement since early Monday morning as the young and the restless on the campus k